an>

Title: Regarding law and order situation in U.P.

डॉ. नैपाल सिंह (रामपुर) : महोदय, आप विधान मंडल के नेता थे, आपने मुझे प्रेशर में बना रखा था।

महोदय, मैं आपके माध्यम से इस सदन का ध्यान ऐसे मुद्दे पर आकर्षित करना चाहूंगा, जो राजनीति का एक कैंसर है और यह कैंसर धार्मिक आधार पर समाज को अलग करता है। पूजा पद्धति पर भी इसका प्रभाव पड़ता है, यह मौलिक अधिकारों को छीनता है, व्यक्तियों में धार्मिक भावना उबालता है। मैं ऐसे तुष्टिकरण के कैंसर को एक उदाहरण के द्वारा आपके समक्ष रखूंगा।

मान्यवर, मुरादाबाद जिले में चंदेरी अकबरपुर एक गाँव है जो कांठ में आता है। वहाँ गाँव में छोटे से शैडयूल्ड कास्ट के लोग रहते हैं। वहाँ उनका एक बहुत पुराना मंदिर है, उस पर एक बाउंड्री है। वहाँ पर एक लाउडस्पीकर बजता था। मैंने कैंसर इसलिए कहा है कि यह राजनीति का नंगा नाच है। मान्यवर, वहाँ पर पता नहीं कैसे क्या हुआ, कौन से लोग पुलिस में गए या कौन से लोग प्रशासन के पास गए, वहाँ प्रशासन ने बजाय इसके कि यह प्रयास किया होता कि दोनों समुदायों के बीच में मामला सुलझ जाए, इसके बजाय पुलिस और प्रशासन के लोग वहाँ जाकर माइक को छीन लाए और इससे वहाँ की जनता में आक्रोश आ गया। यह आक्रोश स्वाभाविक था। पूजा पद्धति तो मौलिक अधिकार है लेकिन धीरे-धीरे यह परंपरा का रूप लेता चला जा रहा है। उससे आक्रोशित होकर, आवेश में आकर 27 तारीख को कांठ में उन्होंने एक सम्मेलन किया, मीटिंग की और कहा कि हमसे गलत व्यवहार किया जा रहा है, हम दोनों ही आपस में सुलह कर लेते। ...(व्यवधान)

माननीय सभापति : इस घटना का उल्लेख करना ज़रूरी है क्या?

डॉ. नैपाल सिंह : महोदय, मैं तो बहुत कम बोलने वालों में से हूँ। ...(व्यवधान)

माननीय सभापति : मैंने डॉ. नेपाल सिंह को बुलाया है। इसके अलावा जो माननीय सदस्य बोल रहे हैं, कोई भी बात रिकार्ड पर नहीं जाएगी, केवल डॉ. नेपाल सिंह जी को मैंने बुलाया है।

*(Interruptions) â€¦**

माननीय सभापति : धर्मेन्द्र जी, आप बैठ जाएँ प्लीज़। सदन गुमराह नहीं हो रहा है।

â€¦(व्यवधान)

माननीय सभापति : राजेन्द्र जी, अब सब न बोलें। अब व्यवधान पैदा न करें। बैठ जाएँ।

â€¦(व्यवधान)

माननीय सभापति : आप सभी लोग बैठ जाएँ। योगी जी, आप भी बैठिये। आप लोग आपस में बात न करें।

â€¦(व्यवधान)

माननीय सभापति : कोई बात रिकार्ड में नहीं जाएगी। आपस में बात न करें।

*(Interruptions) â€¦**

माननीय सभापति : योगी जी, आप प्लीज़ बैठिये।

â€¦(व्यवधान)

माननीय सभापति : अरे, आप तो राजधानी से हैं मान्यवर। उनको बोलने दीजिए। डॉ. नेपाल सिंह जी, आप कहिए।

â€¦(व्यवधान)

माननीय सभापति : देखिये, यह कोई फ्री फॉर ऑल नहीं हो रहा है। प्लीज़ बैठिये।

डॉ. नेपाल सिंह जी, आप बोलिये और अपनी बात जल्दी से खत्म कीजिए।

डॉ. नैपाल सिंह : मान्यवर, उसके बाद उन्होंने 4 जुलाई को एक पंचायत बुलाई। पुलिस की ज़्यादती बढ़ गई और 62 लोगों को 11 बजे के करीब थाने में बंद कर दिया। 11 बजे से 7 बजे तक 7x7 के कमरों में उनको रखा गया जहाँ पानी, पंखा नहीं था। उनको पानी भी नहीं दिया गया। अब पता नहीं यह सरकार का कौन सा नियम है, मैं नहीं जानता। उन कमरों में उनको रखा गया और 7 बजे उनको पीटा गया। पीटना भी ऐसा कि उनके गालों पर चप्पल मारीं, उनके गाल और कान सूज गए और कान में भी दर्द हुआ। बाद में डंडों से पीटा गया। 7x7 के कमरों में 12-1 बजे तक उनको रखा गया। ...(व्यवधान) माननीय यादव जी से मैं एवसवयूज़ चाहता हूँ। मैं इनक्वायरी मांगूँगा, आप करा लें। ...(व्यवधान)

माननीय सभापति : कुछ मांग की आपने?

डॉ. नैपाल सिंह : मैं मांग कर रहा हूँ। माननीय सभापति जी, इस घटना के बाद मुझको बिजनौर जाना था, मुझे भीकनपुर रोक दिया गया, माननीय सैनी साहब भी थे।

माननीय सभापति : मैं यह चाह रहा हूँ कि आप वह मांग कर दें जो केन्द्र सरकार कर सकती हो।

डॉ. नैपाल सिंह : मैं वही बात कर रहा हूँ। मैं अब उस घटना की बात छोड़कर आगे आ गया हूँ। मान्यवर, हमें किस आधार पर रोका गया, हमें बताया नहीं गया। यह विशेषाधिकार का प्रश्न बनता है। वहाँ से छः घंटे के लिए ले जाकर हमें पुलिस लाइन में रखा गया जहाँ कोई पंखा नहीं था। अब किसी सांसद को जिस पर कोई चार्ज नहीं है, न कोई मुचलके हुए, इस प्रकार रखा, यह तो विशेषाधिकार का प्रश्न बनता है। इस पर मैं इन्क्वायरी चाहता हूं। दूसरी बात, ...(व्यवधान) आप मुझे बोलने दीजिए, आपको भी बाद में बोलने का अधिकार है।

दूसरा, मान्यवर कांठ में 11 बजे व्यक्तियों को बंद किया गया, पीटा गया और दूसरे दिन पांच तारीख को तीन-चार बजे के करीब जेल भेजा गया। करीब 24 घण्टे का डिटेनशन और जो थाने में प्रज़ेन्ट थे, उन पर धारा 302 लगा दी गई। मैं इस पर जांच चाहता हूं।

माननीय सभापति : आपका सारा विषय आ गया है, आप कृपया करके बैठ जाइए। आपको विशेष अनुमति दी गई थी।

â€¦(व्यवधान)

डॉ. नैपाल सिंह : मान्यवर, मेरे दो प्वाइंट और हैं।...(व्यवधान)

श्री रमेश बिधूड़ी (दक्षिण दिल्ली) : महोदय, इस पर एसआईटी से जांच करवायी जानी चाहिए। इस पर केन्द्रीय एजेंसी से जांच करवायी जानी चाहिए।...(व्यवधान)

माननीय सभापति : आपको ज्यादा गुस्सा नहीं करना चाहिए, मांग तो माननीय सदस्य करेंगे।

डॉ. नैपाल सिंह : माननीय सभापति जी, मेरा एक बिन्दु और है जो मैं आपके संज्ञान में डालना चाहता हूं। क्या पूजा-पद्धति मौलिक अधिकार नहीं है? क्या पद्धति कहीं से भी संविधान से जुड़ी है? एक को एलाऊड है और एक को नहीं है? एक का बनता रहता है। वहां गांव में चार धार्मिक स्थल ऐसे थे जो अध बने थे, निर्माण नहीं हुआ था वहां माइक लगे हुए थे।

माननीय सभापति : डॉ. साहब आपका विषय आ गया है। आपको एक ही विषय उठाना था, लेकिन उसी में आपने दर्जनों विषय उठा दिए।

डॉ. नैपाल सिंह : मान्यवर, यह पुलिस की ज्यादती का विषय है और मैं इस पर जांच चाहता हूं, इनक्वायरी चाहता हूं। यादव जी से भी चाहूंगा कि find out the facts.

माननीय सभापति : वह आश्वासन कैसे देंगे?

डॉ. नैपाल सिंह : वहां इनकी सरकार सही है तो बहुत अच्छा है, नहीं है तो उनको दोष देना चाहिए।

माननीय सभापति : यहां इनकी-उनकी सरकार का प्रश्न नहीं है। आपने विषय रख दिया है, आप बैठ जाइए।

â€¦(व्यवधान)

श्री धर्मेन्द्र यादव (बदायूँ) : महोदय, आप बहुत वरिष्ठ सदस्य हैं, नैपाल सिंह जी भी हैं। जब सांसद को संसद में आने से रोका जाता है, उस समय विशेषाधिकार का मामला बनता है।...(व्यवधान)

माननीय सभापति : अपने विशेषाधिकार के बारे में माननीय सदस्य ने अपनी बात कह दी है। आप उस विषय को क्यों उठा रहे हैं? उसको बार-बार उठाने की क्या जरूरत है? आप बैठ जाइए।